

दक्षिण एशिया की क्षेत्रीय सुरक्षा संरचना में भारत की आत्मनिर्भर रक्षा नीति: एक मूल्यांकन

विभांशु सिंह¹, प्रो. विनोद कुमार सिंह²

¹शोध छात्र, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग

²आचार्य, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग

^{1,2}दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

सारांश :

दक्षिण एशिया की क्षेत्रीय सुरक्षा संरचना ऐतिहासिक प्रतिद्वंद्विताओं, सीमावर्ती विवादों, परमाणु भयादोहन, आतंकवाद, समुद्री सुरक्षा चुनौतियों तथा बाहरी शक्तियों की बढ़ती रणनीतिक उपस्थिति से प्रभावित रही है। इन जटिल परिस्थितियों में भारत की आत्मनिर्भर रक्षा नीति एक रणनीतिक अनिवार्यता के रूप में उभरी है। प्रस्तुत शोधपत्र पूर्ववर्ती अध्ययनों और उपलब्ध साहित्य के विश्लेषण के आधार पर यह मूल्यांकन करता है कि आत्मनिर्भरता-आधारित रक्षा दृष्टिकोण किस प्रकार भारत की सामरिक स्वायत्तता, प्रतिरोधक क्षमता तथा क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन को प्रभावित कर रहा है। अध्ययन में रक्षा आधुनिकीकरण, स्वदेशी उत्पादन, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, निजी क्षेत्र की भागीदारी तथा 'आत्मनिर्भर भारत' पहल के अंतर्गत रक्षा उद्योग सुधारों का विश्लेषण किया गया है। साहित्य समीक्षा से संकेत मिलता है कि आयात-निर्भरता में कमी, घरेलू रक्षा विनिर्माण क्षमता का विस्तार और रणनीतिक साझेदारियों का पुनर्संतुलन भारत को अधिक लचीली और दीर्घकालिक सुरक्षा नीति अपनाने में सक्षम बना रहा है। साथ ही, यह नीति दक्षिण एशिया में शक्ति-राजनीति, भय प्रतिरोधक संतुलन और क्षेत्रीय सहयोग की संभावनाओं को भी पुनर्परिभाषित कर रही है। यह शोध निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि आत्मनिर्भर रक्षा नीति केवल सैन्य क्षमता वृद्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारत की विदेश नीति, आर्थिक सुरक्षा और भू-राजनीतिक स्थिति को भी सुदृढ़ करने का माध्यम है। हालांकि, तकनीकी निर्भरता, संसाधन सीमाएँ और क्षेत्रीय अविश्वास जैसी चुनौतियाँ इसके प्रभावी क्रियान्वयन में बाधक बनी हुई हैं।

मुख्य शब्द: आत्मनिर्भर रक्षा नीति, क्षेत्रीय सुरक्षा संरचना, सामरिक स्वायत्तता, प्रतिरोधक क्षमता, रक्षा आधुनिकीकरण, शक्ति संतुलन, भू-राजनीतिक परिवेश

I. प्रस्तावना

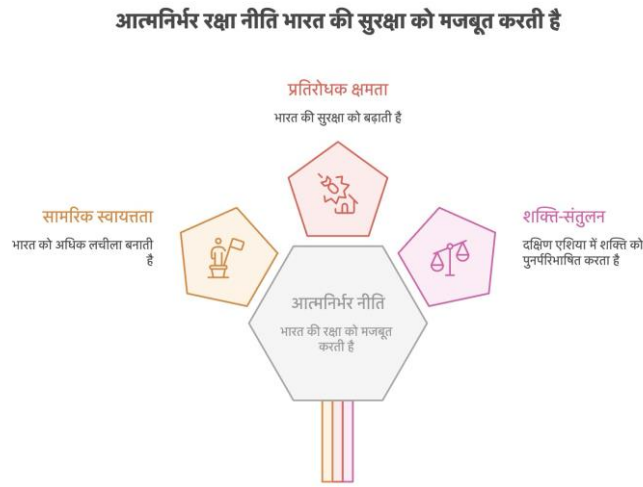
दक्षिण एशिया विश्व के उन क्षेत्रों में से एक है जहाँ सुरक्षा चुनौतियाँ बहुस्तरीय, ऐतिहासिक और सामरिक जटिलताओं से जुड़ी हुई हैं। सीमावर्ती विवाद, आतंकवाद, समुद्री मार्गों की सुरक्षा, परमाणु शक्ति संतुलन तथा बाहरी शक्तियों की रणनीतिक सक्रियता इस क्षेत्र की सुरक्षा संरचना को निरंतर प्रभावित करती रही है। ऐसी परिस्थितियों में भारत, जो भौगोलिक, जनसांख्यिकीय और सामरिक दृष्टि से क्षेत्र की प्रमुख शक्ति है, अपनी सुरक्षा नीति को केवल प्रतिक्रियात्मक दृष्टिकोण तक सीमित नहीं रख सकता। इसी संदर्भ में आत्मनिर्भर रक्षा नीति का महत्व उभरकर सामने आता है।

आत्मनिर्भरता की अवधारणा केवल रक्षा उपकरणों के स्वदेशी निर्माण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह तकनीकी क्षमता, अनुसंधान-विकास, औद्योगिक आधार और रणनीतिक निर्णय-स्वतंत्रता को सुदृढ़ करने से भी संबंधित है। रक्षा आयात पर अत्यधिक निर्भरता किसी भी राष्ट्र की सामरिक स्वायत्तता को सीमित कर सकती है तथा आपात परिस्थितियों में उसकी तत्परता को प्रभावित कर सकती है। इसलिए भारत ने रक्षा उत्पादन, नवाचार और निजी भागीदारी को प्रोत्साहित करते हुए दीर्घकालिक सुरक्षा ढाँचे के निर्माण पर बल दिया है।

यह शोधपत्र दक्षिण एशिया की क्षेत्रीय सुरक्षा संरचना के संदर्भ में भारत की आत्मनिर्भर रक्षा नीति का समग्र मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। इसमें यह विश्लेषण किया गया है कि यह नीति किस प्रकार भारत की प्रतिरोधक क्षमता को सुदृढ़ करती है, क्षेत्रीय शक्ति संतुलन को प्रभावित करती है तथा व्यापक भू-राजनीतिक परिदृश्य में भारत की स्थिति को सशक्त बनाती है।

II. संकल्पनात्मक रूपरेखा: क्षेत्रीय सुरक्षा संरचना

क्षेत्रीय सुरक्षा संरचना से आशय उन संस्थागत, सामरिक और वैचारिक व्यवस्थाओं से है जिनके माध्यम से किसी भौगोलिक क्षेत्र में राष्ट्र अपनी सामूहिक तथा व्यक्तिगत सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं। यह संरचना केवल सैन्य गठबंधनों तक सीमित नहीं होती, बल्कि इसमें कूटनीतिक संवाद, आर्थिक परस्पर निर्भरता, सामरिक संतुलन, प्रतिरोधक क्षमता, सीमा प्रबंधन, समुद्री सुरक्षा तथा बहुपक्षीय सहयोग जैसे तत्व भी सम्मिलित होते हैं। दक्षिण



एशिया के संदर्भ में यह संरचना विशेष रूप से जटिल है, क्योंकि यहाँ ऐतिहासिक अविश्वास, सीमाई विवाद, असमान शक्ति वितरण और परमाणु क्षमताओं का सह-अस्तित्व पाया जाता है।

सैद्धांतिक दृष्टि से क्षेत्रीय सुरक्षा संरचना को शक्ति संतुलन, सामूहिक सुरक्षा, भयप्रतिरोधक सिद्धांत और रणनीतिक स्वायत्तता जैसे प्रमुख सिद्धांतों के माध्यम से समझा जा सकता है। शक्ति संतुलन का सिद्धांत इस विचार पर आधारित है कि क्षेत्र में किसी एक राष्ट्र का अत्यधिक प्रभुत्व अन्य देशों को प्रतिरोधक उपाय अपनाने के लिए प्रेरित करता है। वहीं, सामूहिक सुरक्षा का दृष्टिकोण सहयोग और विश्वास-निर्माण पर बल देता है। भयादोहन सिद्धांत संभावित आक्रमण को रोकने के लिए प्रतिशोध की क्षमता के प्रदर्शन को महत्वपूर्ण मानता है।



स्रोत: <https://www.drishtias.com/hindi/daily-updates/daily-news-editorials/from-crisis-to-cooperation-india-s-role-in-south-asia>

दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सुरक्षा संरचना इन सभी तत्वों के अंतर्संबंध से निर्मित होती है। यहाँ सुरक्षा केवल पारंपरिक सैन्य आयाम तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें ऊर्जा सुरक्षा, समुद्री मार्गों की सुरक्षा, तकनीकी आत्मनिर्भरता तथा आंतरिक स्थिरता भी शामिल हैं। इस प्रकार, क्षेत्रीय सुरक्षा संरचना को एक गतिशील और बहुआयामी ढाँचे के रूप में समझा जाना चाहिए, जिसमें प्रत्येक राष्ट्र की नीति और क्षमता क्षेत्रीय संतुलन को प्रभावित करती है।

III. भारत की रक्षा नीति का विकास

भारत की रक्षा नीति का विकास स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् बदलते भू-राजनीतिक परिवेश, क्षेत्रीय संघर्षों और वैश्विक शक्ति-संतुलन के प्रभावों के साथ क्रमिक रूप से हुआ है। प्रारंभिक दशकों में भारत ने शांति, गुटनिरपेक्षता और कूटनीतिक संतुलन पर आधारित दृष्टिकोण अपनाया। उस समय रक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य सीमाओं की सुरक्षा तथा नवस्वतंत्र राष्ट्र की संप्रभुता की रक्षा था। सीमित संसाधनों और विकासात्मक प्राथमिकताओं के कारण रक्षा आधुनिकीकरण अपेक्षाकृत धीमी गति से आगे बढ़ा।

साठ और सत्तर के दशक में सीमावर्ती संघर्षों तथा क्षेत्रीय तनावों ने भारत को अपनी सैन्य क्षमताओं के सुदृढीकरण की आवश्यकता का अहसास कराया। इसके परिणामस्वरूप रक्षा ढाँचे में पुनर्गठन, सैन्य आधुनिकीकरण तथा रणनीतिक अवरोधक क्षमता के निर्माण पर विशेष बल दिया गया। परमाणु क्षमता के विकास ने भारत की सुरक्षा नीति को एक नए आयाम प्रदान किया, जिससे क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन में परिवर्तन आया।



स्रोत: <https://www.dhyeyaias.com/hi/current-affairs/daily-current-affairs/india-defence-transformation-self-reliance>

नव्वे के दशक के पश्चात् वैश्वीकरण और प्रौद्योगिकी क्रांति के प्रभाव से भारत की रक्षा नीति अधिक व्यापक और बहुआयामी होती गई। आयात-आधारित रक्षा व्यवस्था की सीमाओं को पहचानते हुए स्वदेशी उत्पादन, अनुसंधान-विकास और निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहन दिया गया। इक्कीसवीं सदी में 'आत्मनिर्भरता' को नीति का केंद्रीय तत्व बनाया गया, जिसका उद्देश्य रक्षा क्षेत्र में तकनीकी स्वायत्तता और दीर्घकालिक सामरिक लचीलापन सुनिश्चित करना है।

वर्तमान समय में भारत की रक्षा नीति केवल पारंपरिक सैन्य शक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें समुद्री सुरक्षा, अंतरिक्ष एवं साइबर आयाम, सीमापार आतंकवाद के विरुद्ध रणनीतियाँ तथा क्षेत्रीय साझेदारियों का संतुलित प्रबंधन भी शामिल है। इस प्रकार, भारत की रक्षा नीति का विकास एक निरंतर अनुकूलन की प्रक्रिया रही है, जो बदलती सुरक्षा चुनौतियों के अनुरूप स्वयं को पुनर्परिभाषित करती रही है।

IV. भारत की आत्मनिर्भर रक्षा नीति के प्रमुख घटक

भारत की आत्मनिर्भर रक्षा नीति बहुआयामी दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसका उद्देश्य दीर्घकालिक सामरिक स्वायत्तता, तकनीकी सशक्तिकरण और रक्षा उत्पादन में आत्मविश्वास स्थापित करना है। इस नीति के अंतर्गत कई संरचनात्मक, औद्योगिक और नीतिगत घटक सम्मिलित हैं, जो परस्पर जुड़े हुए हैं।

पहला प्रमुख घटक **स्वदेशी रक्षा उत्पादन और विनिर्माण क्षमता का विस्तार** है। इसके अंतर्गत रक्षा उपकरणों, आयुध प्रणालियों, संचार तकनीकों और उन्नत प्लेटफार्मों का देश में ही विकास और निर्माण करने पर बल दिया गया है। इससे न केवल आयात पर निर्भरता कम होती है, बल्कि घरेलू उद्योगों को भी प्रोत्साहन मिलता है। रक्षा क्षेत्र में सार्वजनिक उपक्रमों के साथ-साथ निजी उद्योगों की भागीदारी बढ़ाना इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

दूसरा घटक **अनुसंधान एवं विकास को सुदृढ़ करना** है। रक्षा प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता तभी संभव है जब देश के वैज्ञानिक संस्थान, तकनीकी विश्वविद्यालय और रक्षा अनुसंधान संगठन नवाचार को बढ़ावा दें। स्वदेशी मिसाइल प्रणाली, संचार नेटवर्क, ड्रोन तकनीक और साइबर सुरक्षा ढाँचे का विकास इस दिशा में प्रगति को दर्शाता है।

तीसरा महत्वपूर्ण तत्व **नीतिगत सुधार और संरचनात्मक पुनर्गठन** है। रक्षा खरीद प्रक्रिया में पारदर्शिता, दीर्घकालिक योजना, स्वदेशी सामग्री के लिए प्राथमिकता और विदेशी निवेश की संतुलित अनुमति जैसी पहलें नीति के प्रभावी क्रियान्वयन में सहायक हैं। इससे रक्षा उद्योग में प्रतिस्पर्धा, गुणवत्ता और समयबद्धता सुनिश्चित होती है।

चौथा घटक **रणनीतिक साझेदारी और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण** है। आत्मनिर्भरता का अर्थ पूर्ण अलगाव नहीं, बल्कि संतुलित सहयोग है। उन्नत तकनीकों के लिए अंतरराष्ट्रीय साझेदारियों के माध्यम से ज्ञान और कौशल का हस्तांतरण दीर्घकालिक स्वदेशी क्षमता निर्माण में सहायक सिद्ध होता है।

अंततः, यह नीति केवल सैन्य सुदृढीकरण का माध्यम नहीं है, बल्कि आर्थिक विकास, रोजगार सृजन और औद्योगिक आधुनिकीकरण से भी जुड़ी हुई है। इन सभी घटकों का समन्वित क्रियान्वयन भारत को क्षेत्रीय सुरक्षा संरचना में अधिक आत्मविश्वासी और सक्षम शक्ति के रूप में स्थापित करने में सहायक बनता है।

V. दक्षिण एशियाई सुरक्षा संरचना पर प्रभाव

भारत की आत्मनिर्भर रक्षा नीति का दक्षिण एशिया की सुरक्षा संरचना पर व्यापक और बहुस्तरीय प्रभाव देखा जा सकता है। चूँकि भारत इस क्षेत्र की प्रमुख सैन्य एवं आर्थिक शक्ति है, उसकी रक्षा रणनीति में होने वाले परिवर्तन स्वाभाविक रूप से क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन, भयादोहन क्षमता तथा कूटनीतिक समीकरणों को प्रभावित करते हैं। आत्मनिर्भरता पर आधारित रक्षा दृष्टिकोण ने भारत को बाहरी आपूर्ति शृंखलाओं पर निर्भरता कम करने और संकट की परिस्थितियों में त्वरित निर्णय लेने की क्षमता प्रदान की है, जिससे उसकी सामरिक विश्वसनीयता में वृद्धि हुई है। पहला महत्वपूर्ण प्रभाव **क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन के पुनर्संरचना** के रूप में देखा जा सकता है। स्वदेशी सैन्य प्रणालियों के विकास और आधुनिकीकरण से भारत की प्रतिरोधक क्षमता सुदृढ हुई है। इससे संभावित आक्रामक प्रवृत्तियों को निरुत्साहित करने की क्षमता बढ़ती है, जिससे क्षेत्र में सामरिक स्थिरता को बल मिलता है। हालांकि, यह भी संभव है कि पड़ोसी देश अपनी सुरक्षा नीतियों में समायोजन करें, जिससे प्रतिस्पर्धात्मक सैन्य आधुनिकीकरण की प्रवृत्ति उत्पन्न हो।

दूसरा प्रभाव **सुरक्षा सहयोग के नए आयामों** के रूप में सामने आता है। आत्मनिर्भर रक्षा उत्पादन भारत को रक्षा निर्यात और तकनीकी साझेदारी के अवसर प्रदान करता है। दक्षिण एशियाई देशों के साथ रक्षा प्रशिक्षण, उपकरण आपूर्ति और संयुक्त अभ्यास जैसे उपाय क्षेत्रीय विश्वास निर्माण में सहायक हो सकते हैं। इस प्रकार, आत्मनिर्भरता सहयोगात्मक सुरक्षा व्यवस्था को भी प्रोत्साहित कर सकती है।

तीसरा, इस नीति का प्रभाव **भू-राजनीतिक संतुलन** पर पड़ता है। जब कोई राष्ट्र रक्षा क्षेत्र में स्वायत्तता प्राप्त करता है, तो उसकी विदेश नीति अधिक लचीली और स्वतंत्र हो जाती है। इससे भारत क्षेत्रीय और वैश्विक मंचों पर अपनी स्थिति को अधिक आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत कर सकता है।

साथ ही, आत्मनिर्भर रक्षा नीति का प्रभाव केवल पारंपरिक सैन्य आयामों तक सीमित नहीं है। समुद्री सुरक्षा, साइबर संरक्षण, अंतरिक्ष क्षमताएँ और आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में सुदृढीकरण से क्षेत्रीय सुरक्षा का दायरा व्यापक होता है। हालांकि, पारदर्शिता, विश्वास निर्माण और संवाद की निरंतरता आवश्यक है ताकि यह नीति प्रतिस्पर्धा के बजाय स्थिरता और सहयोग को बढ़ावा दे।

इस प्रकार, भारत की आत्मनिर्भर रक्षा नीति दक्षिण एशियाई सुरक्षा संरचना को पुनर्परिभाषित करने की क्षमता रखती है, बशर्ते इसे संतुलित और समावेशी दृष्टिकोण के साथ क्रियान्वित किया जाए।

VI. चुनौतियाँ एवं सीमाएँ

भारत की आत्मनिर्भर रक्षा नीति यद्यपि दीर्घकालिक सामरिक स्वायत्तता की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है, तथापि इसके प्रभावी क्रियान्वयन के समक्ष अनेक चुनौतियाँ और सीमाएँ विद्यमान हैं। सबसे प्रमुख चुनौती **उन्नत प्रौद्योगिकी पर आंशिक निर्भरता** है। रक्षा क्षेत्र में अत्याधुनिक प्रणालियों, उच्च स्तरीय इलेक्ट्रॉनिक्स, इंजन तकनीक तथा साइबर अवसंरचना के विकास हेतु अभी भी बाहरी सहयोग की आवश्यकता बनी रहती है। पूर्ण तकनीकी आत्मनिर्भरता प्राप्त करना समयसाध्य और संसाधन-गहन प्रक्रिया है।

दूसरी महत्वपूर्ण सीमा **अनुसंधान एवं विकास में निवेश और दक्षता** से जुड़ी है। रक्षा अनुसंधान परियोजनाओं में विलंब, लागत वृद्धि तथा परीक्षण संबंधी जटिलताएँ उत्पादन चक्र को प्रभावित कर सकती हैं। नवाचार को बढ़ावा देने के लिए वैज्ञानिक संस्थानों, उद्योगों और सशस्त्र बलों के मध्य बेहतर समन्वय आवश्यक है।

तीसरी चुनौती **वित्तीय संसाधनों का संतुलन** है। रक्षा आधुनिकीकरण और स्वदेशी उत्पादन के लिए बड़े पैमाने पर पूँजी निवेश की आवश्यकता होती है, जबकि समानांतर रूप से सामाजिक और विकासात्मक आवश्यकताओं पर भी व्यय करना पड़ता है। सीमित बजटीय संसाधनों में प्राथमिकताओं का निर्धारण एक जटिल कार्य बन जाता है।

चौथी सीमा **वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं और भू-राजनीतिक दबावों** से संबंधित है। अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंध, निर्यात नियंत्रण व्यवस्थाएँ और बदलते कूटनीतिक समीकरण रक्षा परियोजनाओं को प्रभावित कर सकते हैं। आत्मनिर्भरता का उद्देश्य इन जोखिमों को कम करना है, परंतु वैश्विक परस्पर निर्भरता को पूरी तरह समाप्त करना संभव नहीं है।

अंततः, **क्षेत्रीय अविश्वास और प्रतिस्पर्धात्मक दृष्टिकोण** भी एक चुनौती के रूप में उभर सकते हैं। यदि पारदर्शिता और संवाद की प्रक्रिया सुदृढ़ न हो, तो रक्षा सुदृढ़ीकरण को पड़ोसी देशों द्वारा संदेह की दृष्टि से देखा जा सकता है। इस प्रकार, आत्मनिर्भर रक्षा नीति की सफलता तकनीकी नवाचार, संस्थागत सुधार, वित्तीय संतुलन और क्षेत्रीय विश्वास-निर्माण जैसे कारकों के प्रभावी समन्वय पर निर्भर करती है।

VII. रणनीतिक निहितार्थ एवं भविष्य की संभावनाएँ

भारत की आत्मनिर्भर रक्षा नीति के रणनीतिक निहितार्थ बहुआयामी हैं। सर्वप्रथम, यह नीति भारत की **सामरिक स्वायत्तता** को सुदृढ़ करती है, जिससे बाहरी दबावों या आपूर्ति व्यवधानों की स्थिति में भी राष्ट्रीय सुरक्षा हितों की रक्षा संभव हो सके। स्वदेशी उत्पादन क्षमता और तकनीकी विकास भारत को दीर्घकालिक सुरक्षा नियोजन में अधिक लचीलापन प्रदान करते हैं। इसके परिणामस्वरूप निर्णय-निर्माण प्रक्रिया अधिक स्वतंत्र और परिस्थिति-उपयुक्त बनती है।

दूसरा महत्वपूर्ण निहितार्थ **प्रतिरोधक क्षमता की विश्वसनीयता** से जुड़ा है। जब किसी राष्ट्र की रक्षा प्रणालियाँ घरेलू स्तर पर विकसित और निर्मित होती हैं, तो उनकी उपलब्धता, रखरखाव और उन्नयन पर पूर्ण नियंत्रण संभव होता है। इससे संकट की घड़ी में त्वरित प्रतिक्रिया और निरंतर सैन्य तत्परता सुनिश्चित होती है।

भविष्य की संभावनाओं की दृष्टि से, आत्मनिर्भर रक्षा नीति भारत को **रक्षा निर्यात और तकनीकी सहयोग** के क्षेत्र में नए अवसर प्रदान कर सकती है। उन्नत प्रौद्योगिकियों जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मानवरहित प्रणालियाँ, साइबर सुरक्षा और अंतरिक्ष क्षमता में निवेश भारत को क्षेत्रीय और वैश्विक मंचों पर प्रतिस्पर्धी स्थिति प्रदान कर सकता है।

साथ ही, यह नीति आर्थिक विकास, रोजगार सृजन और औद्योगिक आधुनिकीकरण को भी प्रोत्साहित करती है। यदि अनुसंधान, उद्योग और सशस्त्र बलों के बीच समन्वय सुदृढ़ बना रहे, तो भारत दीर्घकाल में रक्षा क्षेत्र में तकनीकी नेतृत्व स्थापित कर सकता है।

VIII. निष्कर्ष

दक्षिण एशिया की जटिल और परिवर्तनशील सुरक्षा संरचना के संदर्भ में भारत की आत्मनिर्भर रक्षा नीति एक दूरदर्शी और रणनीतिक पहल के रूप में उभरती है। यह नीति केवल सैन्य उपकरणों के स्वदेशी निर्माण तक सीमित नहीं है, बल्कि तकनीकी सशक्तिकरण, औद्योगिक विकास, सामरिक स्वायत्तता और दीर्घकालिक सुरक्षा नियोजन का व्यापक ढाँचा प्रस्तुत करती है। क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन, भयप्रतिरोधक क्षमता और भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा की परिस्थितियों में आत्मनिर्भरता भारत को अधिक स्वतंत्र और प्रभावी भूमिका निभाने की क्षमता प्रदान करती है।

शोध विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि इस नीति ने रक्षा आधुनिकीकरण, अनुसंधान-विकास और संस्थागत सुधारों को गति दी है, जिससे भारत की सामरिक विश्वसनीयता में वृद्धि हुई है। साथ ही, रक्षा उत्पादन में वृद्धि और संभावित निर्यात अवसर क्षेत्रीय सहयोग और विश्वास-निर्माण की दिशा में भी सकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं।

हालाँकि, तकनीकी चुनौतियाँ, वित्तीय सीमाएँ और क्षेत्रीय अविश्वास जैसी बाधाएँ इसके पूर्ण क्रियान्वयन में संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं। अतः यह आवश्यक है कि आत्मनिर्भर रक्षा नीति को पारदर्शिता, संवाद और सहयोग के साथ आगे बढ़ाया जाए। समग्रतः, यह नीति दक्षिण एशिया की सुरक्षा संरचना में भारत की भूमिका को अधिक सुदृढ़, स्वायत्त और भविष्य-उन्मुख बनाने की क्षमता रखती है।

संदर्भ:

1. भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय. (2023). *वार्षिक प्रतिवेदन 2022-23*. नई दिल्ली: रक्षा मंत्रालय. उपलब्ध: <https://www.mod.gov.in>
2. भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय. (2020). *रक्षा अधिग्रहण प्रक्रिया 2020*. नई दिल्ली: रक्षा मंत्रालय. उपलब्ध: <https://www.mod.gov.in>
3. भारत सरकार, वित्त मंत्रालय. (2023). *केंद्रीय बजट दस्तावेज: रक्षा व्यय विवरण*. नई दिल्ली: भारत सरकार. उपलब्ध: <https://www.indiabudget.gov.in>
4. रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन. (2022). *प्रौद्योगिकी एवं नवाचार रिपोर्ट*. नई दिल्ली: डीआरडीओ. उपलब्ध: <https://www.drdo.gov.in>
5. सिप्री (स्टॉकहोम अंतरराष्ट्रीय शांति अनुसंधान संस्थान). (2023). *विश्व सैन्य व्यय तथ्यपत्रक*. स्टॉकहोम: सिप्री. उपलब्ध: <https://www.sipri.org>
6. पंत, हर्ष वी. (2019). *भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा: चुनौतियाँ और अवसर*. नई दिल्ली: ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन. उपलब्ध: <https://www.orfonline.org>
7. मोहन, सी. राजा. (2013). *समुद्री सुरक्षा और भारत की रणनीति*. नई दिल्ली: कार्नेगी इंडिया. उपलब्ध: <https://carnegieindia.org>
8. चेला, पी. आर. (2018). *दक्षिण एशिया में शक्ति संतुलन और सुरक्षा संरचना*. नई दिल्ली: इंस्टीट्यूट फॉर डिफेंस स्टडीज़ एंड एनालिसिस. उपलब्ध: <https://www.idsa.in>
9. नीति आयोग. (2021). *आत्मनिर्भर भारत: औद्योगिक एवं प्रौद्योगिकीय पहल*. नई दिल्ली: भारत सरकार. उपलब्ध: <https://www.niti.gov.in>
10. संयुक्त राष्ट्र. (2022). *निरस्त्रीकरण एवं सुरक्षा रिपोर्ट*. न्यूयॉर्क: संयुक्त राष्ट्र प्रकाशन. उपलब्ध: <https://www.un.org/disarmament>